· विश्व भारती ·

शान्ति निकेतन

VISVA-BHARATI

(A Central University and an Institution of National Importance)

BOOK OF ABSTRACTS

International Seminar

on

GLOBAL PEACE & SUSTAINABLE DEVELOPMENT THROUGH LANGUAGE & LITERATURE: DREAMS & DESIGNS

27th & 28th March, 2018

Organized by

Department of Arabic, Persian, Urdu & Islamic Studies
Bhasha-Bhavana, Visva Bharati University, Santiniketan

51	اردو کی اہم ادبی تحریکیں اور صنف غزل	خیر الدین اعظم	81
52	ڈاکٹر سلام سندیلوی : بحیثیت نفسیاتی نقاد	Md Ashgar Ansari	83
53	ہم عصر اردو ناولوں میں سماجی مباحث	محمد ریحان	84
54	اردو ادب کےارتقاء میں ادبی تحریکوں کا اہم حصہ	صوفیہ محمود	85
55	اردو ادب کی تحریکوں کا مختصر تنقیدی جا ئزہ	Syeda Jenifar Rezvi	87
56	امیر خسرو اور ان کا نظریہ کائنات	فاطمہ خاتون	89
57	Practice of Arabic in Bangladesh: Origin & Development	Prof. Dr. Md. Obayedul Islam	90
58	শান্তিমন্ত্র এবং উপনিষদ	Nandita Barui	91
59	মান্টোর ছোটগল্পঃ ধূসর সময়ের রূপায়ণ	Arun Samanto	92
60	साहित्य के आँखों से विश्व समुदाय के सपने	Surabhi Shaw	93
61	Semantics of Color in Qazaq and Indian Culture	Iskakova Zaure	94
62	भूमंडलीकरण और मराठी कविता	Dr. Ranvir Sumedh Bhagwan	95

क़ज़ाख़और भारतीय संस्कृति में रंग मान

इस्काकोवा ज़ाउरे
अल-फराबी क़जाख़ राष्ट्रीय विश्वविद्यालय
पूर्वी अध्ययन का संकाय ,मध्य पूर्व और दक्षिण एशिया का विभाग

SEMANTICS OF COLOR IN QAZAQ AND INDIAN CULTURE

Iskakova Zaure
KazNU named after al-Farabi,
Faculty of Oriental Studies, Department of Middle East and South Asia

zaure.iskakova@kaznu.kz

आलेख कजाख और भारतीय संस्कृतियों में रंगों के नामों के अर्थपूर्ण क्षेत्रों की तुलना की जाती है।किसी भी जनता की संस्कृति में, कज़ाख़ और भारतीय सहित, रंग पदनाम का विशेष महत्व है।वास्तव में, ये ऐसे संकेत हैं जो खुद को गहरी जानकारी देते हैं।यह जानकारी जातीय संस्कृति और मानसिकता की विशेषताओं से संबंधित है ,इसलिए कभी-कभी उसके अलग-अलग सिमेंटिक क्षेत्र होते हैं। प्रकृति में सभी रंगों का आधार निश्चित रूप से सफ़ेद है। पारंपरिक रूप से सफ़ेद रंग को शुद्धता, कोमलता, सौंदर्य का प्रतीक माना जाता है।वास्तव में, वह विभिन्न अर्थों को ले सकता है :खुशी से दुख तक।पारंपरिक कज़ाख संस्कृति में, सफ़ेद रंग पवित्र है,यानी सफ़ेद शुद्धता, अखंडता, न्याय का प्रतीक है, साथ ही उच्च सामाजिक स्थिति का भी।इस्लाम धर्ममें मुल्ला की पगड़ी का रंग सफ़ेद है, हालांकि उनका कपड़ा किसी भी रंग का हो सकता हैं।

तुर्किक लोगों में, दूध और डेयरी उत्पादोंने, जिसे सामान्यतः" आक़ "कहा जाता है, आग की तरह, एक महान प्रतीकात्मक भूमिका निभाई थी।अतिथि के लिए पहला पेय क़िमीज़ है – घोड़ी का दूध। भारतीय संस्कृति में सफ़ेद रंग पवित्रता और प्रकाश का प्रतीक माना जाता है।श्वेत रंग सादगी का प्रतीक हैऔर विलासिता के इनकार का। श्वेत रंग शोक का प्रतीक भी है, मृत्यु का रंग, कफ़न हमेशा सफेद होता हैं,साथ ही कजाख लोगों में भी।भारतीय महिलाएं आमतौर पर विभिन्न रंगों के कपड़े पहनती हैं।लेकिन विधवा महिला कभी उज्ज्वल साड़ी नहीं पहनती।उसका जीवन,उसका कपड़ा बेरंग हैं।

भूमंडलीकरण और मराठी कविता

21वीं शताब्दी को भूमंडलीकरण की शताब्दी कहा जाता है। भूमंडलीकरण की व्याख्या मूलत: आर्थिक अंगों से की गई है। भूमंडलीकरण के बारे में नॉम चॉम्सकी कहते हैं "सैद्धांतिक रूप में वैश्वीकरण शब्द का उपयोग आर्थिक वैश्वीकरण के नए उदार रूप का वर्णन करने के लिए किया जाता है।" इस भूमंडलीकरण की परिभाषा में उदारीकरण और निजीकरण सम्मिलित है। दुनिया का एक छोटे से गाँव में तब्दील हो जाना, सबकी भाषा एक जैसे होना, सूचना प्रौद्योगिकी के दम पर इंसान का वैश्वीक इंसान बन जाना यह भूमंडलीकरण के प्रतिक हैं।

भूमंडलीकरण ने केवल दुनिया के अर्थशास्त्र को ही झकझोर नहीं दिया बल्कि इतने ही तीव्रता से जीवन के हर पहलू को झकझोर दिया है। आर्थिक पहलुओं के साथ–साथ भाषा, साहित्य और संस्कृति इनके ऊपर भी यह परिणाम बहुत स्पष्ट तरीके से देखे जा सकते हैं। मिडिया, दूरसंचार सेवा, सिनेमा, प्रचार इनके माध्यम से बाजार एक अपनी नई भाषा गढ़ रहा है, जो सिर्फ मुनाफा जानती है। मुक्त व्यापार योजना, गैट करार इनसे मंझला और छोटा व्यापारी, किसान 21वीं शताब्दी के पहले दशक में ही तबाह हो चुके हैं। आज सबके हाथों में मोबाइल आ गया है, उसमें डेढ जीबी डेटा रोज फ्री आ रहा है पर उस हाथों को काम नहीं है। इस अंतर्राजालीय भ्रम की दुनिया में आप अपने यथार्थ को भूल जाएं ऐसी कामना एम.एम.सी. कंपनियां करती है।

यह सारे भयंकर बदलाव किसी भी भाषा का सृजनशील रचनाकार बहुत गहराई से महसूस करता है। उसे अपनी रचनाकर्म का विषय बनाता है। यह बदलता हुआ परिवेश मराठी साहित्य के कविता विधा में प्रथम और सशक्त तरीके से आया है। भूमंडीकरण के इन बदलावों को मराठी साहित्य के प्रसिद्ध कवि अरुण काले, उत्तम कांबले, सुनिल आउचार, आनंद गायकवाड़ और महेन्द्र भवरे इन्होंने अपने रचनाकर्म का विषय बनाया है। अरुण काले अपनी एक रचना में इन बदलावों का जिक्र करते हुए कहते हैं –

"यह किसकी धमनियां भरी पड़ी है
देशी–विदेशी कॉकटेल से लबालब
नाचेंगे–गाएंगे झिंगलपालपा
झूमेंगे–नाचेंगे झिंगलपालपा"

यह झिंगलपालपा भाषा, साहित्य और संस्कृति के हाइब्रेडायजेशन का परिचायक है।

बीज शब्द – भूमंडलीकरण, मराठी कविता, भाषा, अरुण काले

सुमेध रणवीर
सहा. प्रोफेसर
मराठी विभाग, विश्वभारती